

DPN 6208

Title : चक्रसम्बर विशुद्धि CAKRA SAMBARA VISUDDHI

Run. No. 6899

Cat. No.

Micro. No.

Subject ॐ ह्रीं क्लीं
Tāntric Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 16 x 6.5

Folios 8

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

हठं नमः शीर्षं लवाय नमः शमक काला विनमं प्रकोश विविमाः
 ननं कृष्णवर्णं विवृणक्तं उभयस्य द्वांगमालनी कटि वक्त्राणि वरुणं
 मङ्गयन् विरुचिकं काला रुचय रुचय नय कं वरुणं लव नमः प्रामुः
 कं ॥ ॥ हठं नमः शीर्षं मातृकायै नमः प्रामुः शनीयी नमः कं वमः
 लुल धला लुला वदमा मा विज्ञा लारि नमः प्रामि हं नवा रुनी ॥ १ ॥

माहल्लि वृथा वृथा विष्णु नया कालनी किन ना हुरु वदनी नमा
 मि सलमंदरी ३ नकोमा विवक वलुंगी सकि हसामना
 रुला किन ना वी वृथीय नमामि भयूलवाहीनि ४ नवेव
 वीशाम वल्लु सां चक हसमभा रुगी किन ना विष्णु वृथीय नमामि ग
 रूगनी ॥ ॥ वा बादि ययान दिव दाल वृथां रुयंकली

नय वृथा वृथा कृष्णमक टक्षनि त समर्थि कल्ल धर्मय ४ कया लंमि
 लसिनय ५ ॥ ॥ वव वाधि मृन छदा च नृ दे धन लनम ४
 सबेला कार्य कालि त्वा विष्णु वका हुमोलिन ॥ ३ ॥ मि
 था दृष्टि यदा नार्थ विरु का सा यन नम ५ वरु भाल विना मर्थ रि
 व रक्षा लो टदंष्ट्रिन ॥ ४ ॥ ध्यान यल्ल विष्णु वही वदद वा

चक्रयमि ॥ सनादिनमाकां क. मुरुयनागछुदिक ॥ १५ ॥
यायुदिनाययं या हक. वरुनां च विछुदिक ॥ मुरुयनागछुदिक ॥
जीवं या यनमभा ॥ १६ ॥ ॥ छुदिक सवेसनी यय. रुमा यमयी सनमः
॥ छुदिक सवेसनी यय. रुमा यमयी सनमः ॥ १७ ॥ ॥ छुदिक सवेसनी यय.
गजनमा न विछुदिक ॥ नुवा सुरुं ॥ कवेसनी यय. रुमा यमयी सनमः ॥ कनला

का रमुदुनकां ॥ १८ ॥ ॥ छुदिक सवेसनी यय. रुमा यमयी सनमः
कवेसनी यय. रुमा यमयी सनमः ॥ १९ ॥
रुमा यमयी सनमः ॥ २० ॥ ॥ छुदिक सवेसनी यय. रुमा यमयी सनमः
कवेसनी यय. रुमा यमयी सनमः ॥ २१ ॥ ॥ छुदिक सवेसनी यय. रुमा यमयी सनमः

ॐ का वायव्यं का रुं म धर्मिंदमनसिर्न वृद्धी मू द जायकं नमावेनी
चनजिर्न ॥ १ ॥ ॐ का वायव्यनीयारुं यु द्धे ग जास न सिर्न रु
स्यसम द यायकं नमा मू द्वा रा त धम नं ॥ २ ॥ ॐ का वायव्य
हमारुं दक्षि नमस्तानसिर्न वय दमू द्वा प्र नं वृ द्धं नमामि प्रत्नस
रुवं ॥ ३ ॥ ॐ का वायव्यका रुं य धी म म यू रा स न सिर्न

धम नमू द्वा प्र नं नाथं जूमि नारुं नमामि दं ॥ ४ ॥ ॐ का वा
यव्यममारुं उरु न ग यू दा स न सिर्न जूरु य मू दा स मा दू कं जू
मा ध सिद्धि नमामि दं ॥ ५ ॥ म सर्व वा धि म द्वा य म यं गु ग ना धि
यन जि नं ति म नु कं स द्वा रा जं य के वृ द्धं नमा सु रा ॥ ६ ॥
नि रा वं रु नि रा का व य रा द्वा जा नि प्र यी ति ये रा वृ द्धं सिर्न वं द

वदुसत्वनमस्तु ॥ १ ॥ नमस्तु भक्तिसिद्धाय धर्मवत्तु य
नरुन जगद्गुरु जगन्नाथं भक्तिसिद्धनमास्तु ॥ ८ ॥ जसा
धर्मसूत्रं कथितं लुकिता वामा गदिनं कथं मयि यदया दूष
थ दूषाजि वा दूयं वृद्धास्वह वन जगता वाधिसत्तु दमधुं ॥ ९ ॥
जगत्मा हनु पुलावा हनु यरवानथा
गान्धर्व नरुवा यज निरुदु हर्ववालि

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20



15

10

5

0

CMS

5

10

15

20



15

10

5

0

CMS

5

10

15

20



८३

कालमि कालानां दृष्टिं ह्युद्यानि चक्रुः ॥ द्विष्य द्यु स्यात्पादानां ह्युद्या
द्या देवा ह्युद्या ॥ १ ॥ यथैह नमस्यो वक्रः माला हिलसिद्धाजिल
सर्वरुगैः स्याद्युना कया लिप्तायि यनम ॥ ३ ॥ अयमिह
ननु यत्नाः कृष्णका दृष्टिं ह्युद्या ॥ लीप्ताय यत्ना यत्ना महारुजव
यत्नि क ॥ ४ ॥ कृया ह्यु नु कया वै का वा ना आलिगिननम

शायकैः ननु विद्युद्वशी वक्रा म का ग या एथ ॥ ५ ॥ यथैह याः
जमि ना ह्युद्या वा म य द्वां ग म्वा नि (६) ॥ दृग म्वा रु वि ना मर्थः रुग
वक्ष्या वलनम ॥ ६ ॥ यनादन सर्वदृष्ट्य यत्ना यनं ॥ कुरु
मनु काया लो दक्ष नायक नम ॥ ७ ॥ काय यत्नि रु द्वा
वा नि रु रु य य ह्युद्या न एं रु वा रु व वि क त्या नां रु दार्थं करुया